केला

उन्नत प्रभेद :–

लम्बी प्रभेदें : अलपान, चम्पा, मालभोग, रोबस्ता, शक्कर चिनियाँ, चिनियाँ।

बौनी प्रभेदें : बसराई, केवेंर्डिस।

सब्जी वाली प्रभेदें : बतीसा, बिउला, बनकेल, कचकेल।

सब्जी एवं पका फल दोनों में उपयोग आने वाली प्रभेदें : कोठिया, मुठिया, दूधसागर, चकिया। टिशू कल्चर जी–9 प्रभेद उत्तम है।

लगाने की विधि : 60 60 60 से०मी० आकार के गड्ढे अप्रैल–मई में खोदकर छोड़ दें। जून में प्रति गड्ढे सड़े गोबर की खाद 20 किलोग्राम, अण्डी की खली 1.0 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 300 ग्राम, म्यूरेट् ऑफ पोटाश 1200 ग्राम एवं 300 ग्राम क्लोरोपाइरीफॉस 250 ग्राम डालकर भर दें। रोपाई गड्ढे भरने के 15 से 20 दिनों बाद करें। जून के अन्तिम सप्ताह से अगस्त तक रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। अक्टूबर में 125 ग्राम नत्रजन का व्यवहार करें। पुनः फरवरी के अन्त या मार्च के प्रारंभ में प्रति गड्ढा 125 ग्राम नत्रजन, का व्यवहार करें। अगले वर्ष जून–जुलाई में 20 किलोग्राम कम्पोस्ट, 125 ग्राम नत्रजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस तथा 250 ग्राम पोटाश प्रति गड्ढा व्यवहार करें। इसमें 25 ग्राम बोरेक्स प्रति पौध लाभदायक पाया गया है। फूल निकलने के पूर्व सोलीबोर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में स्टीकर के साथ छिड़काव करना लाभप्रद होता है। इसका छिड़काव एक माह बाद पुनः करें।

दूरी : लम्बी जातियों में 2.0×2.0 मीटर, बौनी प्रजातियों में 1.5 ×1.5 मीटर।

सिंचाई : अप्रैल–जून प्रति सप्ताह, अक्टूबर–मार्च 15 दिनों के अन्तर पर करें। जाड़े में सफेद पॉलीथीन की चादर के थैले से घौंद को ढकने से छीमियाँ जल्दी बढ़ती हैं एवं उपज में करीब 8–10 प्रतिशत वृद्धि होती है। साथ ही स्केरिंग बीटल कीट के आक्रांत होने से बच जाते हैं (केले का चित्तीदार होना)।